“जो संदेह करके खाता है, वह दोषी ठहरता है, क्योंकि वह
विश्वास से नहीं खाता; और जो कुछ विश्वास से नहीं है, वह पाप है।” — रोमियों 14:23 (ERV-HI)

यह शास्त्रवचन हमें बताता है कि यदि कोई व्यक्ति अपने विश्वास के विपरीत जाकर कोई कार्य करता है, तो वह पाप करता है। विश्वास केवल मानसिक सहमति नहीं, बल्कि परमेश्वर की इच्छा के प्रति समर्पण और पालन है। यदि किसी कार्य में संदेह है, तो वह कार्य विश्वास से नहीं है और इसलिए पाप है।

रोमियों 14:14 में संदर्भ

“मैं जानता हूँ और प्रभु यीशु में पूरी तरह से विश्वास करता हूँ कि कोई वस्तु अपने आप में अशुद्ध नहीं है; केवल वही वस्तु उसके लिए अशुद्ध है, जो उसे अशुद्ध मानता है।” — रोमियों 14:14 (ERV-HI)

यह शास्त्रवचन हमें बताता है कि कोई भी वस्तु अपने आप में

अशुद्ध नहीं है; बल्कि, जो व्यक्ति किसी वस्तु को अशुद्ध मानता है, उसके लिए वही वस्तु अशुद्ध है। यह विश्वास की शक्ति और व्यक्तिगत समझ का संकेत है।

विश्वास और स्वतंत्रता

“एक विश्वास करता है कि वह सब कुछ खा सकता है; परन्तु जो विश्वास में कमजोर है, वह केवल साग ही खाता है। जो खाता है,
वह न खानेवाले को तुच्छ न जाने; और जो न खाता है, वह खानेवाले पर दोष न लगाए; क्योंकि परमेश्वर ने उसे ग्रहण किया है।” — रोमियों 14:2-3 (ERV-HI)

यह शास्त्रवचन हमें सिखाता है कि विश्वास में स्वतंत्रता है, लेकिन हमें एक-दूसरे के विश्वास और समझ का सम्मान करना चाहिए। जो व्यक्ति किसी विशेष आहार को नहीं खाता, वह दूसरों को दोषी न ठहराए, और जो खाता है, वह दूसरों को तुच्छ न जाने।

पाप कब होता है?

यदि कोई व्यक्ति अपने विश्वास के विपरीत जाकर कोई कार्य करता

है, तो वह पाप करता है। जैसे कि रोमियों 14:23 में कहा गया है:

“जो संदेह करके खाता है, वह दोषी ठहरता है, क्योंकि वह
विश्वास से नहीं खाता; और जो कुछ विश्वास से नहीं है, वह पाप है।” — रोमियों 14:23 (ERV-HI)

यह शास्त्रवचन स्पष्ट रूप से बताता है कि विश्वास के बिना किया गया कोई भी कार्य पाप है।

ईसाइयों और गैर-ईसाइयों के लिए आवेदन

यदि आप ईसाई हैं और अभी भी विश्वास करते हैं कि कुछ खाद्य पदार्थ अशुद्ध हैं, तो बाइबल आपको अपने विश्वास का पालन करने की सलाह देती है। लेकिन साथ ही, आपको परमेश्वर के वचन की सच्चाई को समझने और बढ़ने की आवश्यकता है।

यदि आप अभी तक ईसाई नहीं हैं, तो जानिए कि यीशु आपको गहरे प्रेम से चाहता है और आपके पापों के लिए मरा है। आप जैसे हैं, वैसे ही यीशु के पास आ सकते हैं, और वह आपको स्वीकार करेगा। उसके लिए आपका हृदय आपके बाहरी आचरण से अधिक महत्वपूर्ण है।

यीशु को स्वीकार करने के लिए एक सरल प्रार्थना

यदि आपने आज यीशु को स्वीकार करने का निर्णय लिया है, तो अगला कदम सरल है। जहाँ भी आप हैं, घुटने टेकें और यह प्रार्थना करें:

“प्रभु यीशु, मैं विश्वास करता हूँ कि आप परमेश्वर के पुत्र हैं। मैं आपको अपने हृदय में स्वीकार करता हूँ और आपके पीछे चलने का संकल्प करता हूँ। मेरे पापों को क्षमा करें और मुझे अनन्त जीवन की ओर मार्गदर्शन करें। आमीन।”

प्रभु आपको आशीर्वाद दे!

JIUNGE NA GROUP LETU LA WHATSAPP HAPA >> WHATSAPP GROUP….

Share on:
WhatsApp